[illegible] कुमार यादव
हिन्दी विभाग
डी॰ के॰ कार्तिक कॉलेज
बक्सर (बिहार)

नीली झील - एकांकी डॉ॰ धर्मवीर भारती ।

डॉ॰ धर्मवीर भारती रचित 'नीली झील' एक दार्शनिक एवं काल्पनिक एकांकी है। इसके अन्तर्गत ईसा के जन्म के 1950 वर्षों के बाद के समय की लेखकीय कल्पना के सहारे पूरी तरह मूर्त किया गया है। नीली झील और उसके आस-पास का सम्पूर्ण परिवेश पवित्रता का परिचायक है। वहाँ के निवासी सांसारिक राग-द्वेष, छल-छद्म और स्वार्थपरता से पूरी तरह मुक्त हैं। इसीलिए उनकी आत्माओं की प्रतिच्छायाएँ नीली झील में दिखलाई पड़ती हैं। 'नीली झील' का बूढ़ा तांत्रिक वहाँ के निवासियों की आत्माओं का लेखा-जोखा रखता है। इसी कथा-परिवेश में एकांकी की एकमात्र घटना के रूप में एक आगन्तुक का प्रवेश होता है। वह मूलतः 'नीली झील' का ही निवासी है, जो बाहरी दुनिया में जाकर भौतिक सुखों की प्राप्ति की अन्धी दौड़ में शामिल होकर अपनी आत्मा को खो चुका है। बूढ़ा तांत्रिक आगन्तुक को पुनः उसी दुनिया में जाकर भौतिक सुखों की तलाश में पागल लोगों के बीच श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों के प्रचार-प्रसार की सलाह देता है- "हाँ, तुम नयी आत्मा ढूँढ़ने के लिए वापस जाओ उसी देश में, जहाँ युद्ध हो रहे हैं, जहाँ प्रजा रक्तपात कर रही है, जहाँ फौलाद की भट्ठियाँ धधक रही हैं। जाओ उस संघर्ष का अर्थ समझो। अन्धेरे से विद्रोह करो, प्रकाश पर आस्था रखो, तुम्हें नयी आत्मा मिलेगी।" ऐसा करके ही वह दुबारा अपनी आत्मा को पा सकता है। इस तरह इस एकांकी में घटना बहुलता नहीं है, फिर भी इसमें सरसता और कौतूहल विद्यमान है।

प्रस्तुत एकांकी की नीली झील का सम्पूर्ण :
परिवेश काल्पनिक है। इसका संकेत स्वयं एकांकीकार के
ने दिया है- "सारा दृश्य इन्द्रजाल मालूम होता है।
न पहाड़ असली है, न पेड़, न कोहरा, न झील और न
बाँसुरी का यह संगीत ही इस लोक का मालूम होता है;
जो जादू के इन नकली रहस्यमय पहाड़ों में रह-रहकर ही
गूँज उठता है।" बूढ़ा तांत्रिक भी आगन्तुक से कहता है- 'क
यह झूठ था नीली झील, यह घाटी, इसके लोग - यह सब
मेरी कल्पना थी, मेरा इन्द्रजाल था। असल था सत्य स
था केवल वह, जो दोनों बाँहें फैलाये अपनी आभा
ढूँढ रहा है।' लेकिन अपनी कला द्वारा एकांकीकार ह-
ने इस एकांकी की कथा को इस प्रकार प्रस्तुत
किया है कि सब-कुछ सत्य ही प्रतीत होता है,
वैसे ही नीली झील भी। एकांकीकार ने काल्पनिक कथानक
द्वारा एक बहुत बड़े सत्य का उद्घाटन किया है।

'नीली झील' एकांकी के कथोपकथन पात्रानुकूल
एवं भावात्मक हैं। साथ ही स्वाभाविकता एवं सरलता
इनकी विशेषता है। हाँ जहाँ भावात्मक संवाद आये
हैं, वहाँ लम्बे हो गये हैं। ऐसा लगता है व्याख्यान
हैं। ऐसे संवाद तांत्रिक के हैं।

प्रस्तुत एकांकी में आरंभ से लेकर अन्त तक
जिज्ञासा बनी रहती है। एतदर्थ प्रभावान्विति की दृष्टि से
भी यह एकांकी पूर्ण सफल है। 'नीली झील' में नाटकीयता
का कहीं अभाव नहीं। इसे रंगमंच पर आसानी से प्रस्तुत
किया जा सकता है। लेखक ने इसे अभिनेय बनाने के लिए
समुचित रंग-संकेत दिया है। "स्टेज पर एक ओर से एक व्यक्ति
बाँसुरी लिए हुए और दूसरी ओर से दूसरा व्यक्ति एक हाथ में
हँसिया, दूसरे में धान के पूले लिए आता है।"

प्रस्तुत एकांकी 'नीली झील' का शीर्षक पूर्णतः सार्थक है। एकांकीकार ने शीर्षक द्वारा ही इस एकांकी के उद्देश्य की ओर संकेत कर दिया है। 'नीली झील' और वहाँ के निवासी काल्पनिक हैं। उनमें भौतिक सत्यता नहीं, भाव-सत्यता है। 'नीली झील' बिल्कुल शांत है। यहाँ कोई कोलाहल नहीं, सर्वत्र शान्ति और नीरवता है। यहाँ के निवासी आत्माओं के प्रतीक हैं, जिनमें कोई आपा-धापी नहीं। एक दूसरे से प्यार करते हैं। पत्थरों से संगीत निकालते हैं। नीली झील में अपनी छाया देखते हैं। लेखक ने इस शांत वातावरण द्वारा आज के भौतिक जगत को संदेश दिया है कि भौतिक संसाधनों एवं राज्यसत्ता से अहंकार की वृद्धि होती है। फिर रक्तपात होता है। वहाँ आत्मा मर जाती है। इसलिए उसका परित्याग कर शांत और नीरव जीवन व्यतीत करने की आवश्यकता है। तांत्रिक के शब्दों में "वह तुम्हारे व्यक्तित्व को छुएगा, तुम्हारी आत्मा में उतरेगा, क्योंकि तुम्हारे व्यक्तित्व और तुम्हारी आत्मा में आत्माहीन को नयी आत्मा मिलेगी और वही सत्य होगी।"

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट - प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
डी. के. कॉलेज, डुमराँव
बक्सर - (बिहार)